ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(2): 378-380
www.allresearchjournal.com
Received: 27-12-2019
Accepted: 21-01-2020

आदित्य प्रकाश
सहायक प्राध्यापक, प्रदर्शन कला विभाग, ओरियन्टल कॉलेज ऑफ एडुकेशन, सीसो पश्चिम, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
आदित्य प्रकाश
सहायक प्राध्यापक, प्रर्दशन कला विभाग, ओरियन्टल कॉलेज ऑफ एडुकेशन, सीसो पश्चिम, दरभंगा, बिहार, भारत

विद्यालयों में संगीत माध्य से शिक्षा का व्यवहारीक महत्त्व

आदित्य प्रकाश

सारांश
संगीत के सार्वभौमिक प्रभाव से सभी परिचित है, आदिम युग से ही संगीत मनोरंजन के साथ ईश्वर आराधना का महत्वपूर्ण आधार रहा है। दुनियाँ के अधिकतर धर्म ग्रन्थ काव्य रूप में है। संगीत के स्वरो मे असीमशक्ति है, जिससे मानव तो क्या हिंसक प्राणी भी पालतु वन जाते है। संगीत स्वरो भी साधना करने से मानव का अन्तशः से शुद्ध और प्राकृत हो जाता है उससे क्लेश, ईर्ष्या, दुष्टभाव समाप्त हो जाते हैं, संगीत का अपना कोई स्वरूप नही होता है, प्रयोक्ता इसका जिस प्रकार उपयोग करें, सफलता उसकी क्षमता पर निर्भर करता है।

वृन्दावन की भी मंदिरों मे गोस्वामी राधा कृष्ण को जहाँ राग भोग लगाते है, चारों प्रहर का राग सुनाया जाता है, वैष्णव कीर्तन करते है। वही अजमेर शरीफ में हजरत मोईनउद्दीन चिस्ति ख्वाजा गरीब नवाज के उर्स पर कौव्वाल अमीर खुसरो की रचना गाते है, "छाप तिलक सब छिनी लियो मौसे नौन मिलाय के" येसुन उपस्थित सभी लोग झुमने लगते है। संगीत का अपना कोई रंग नहीं होता है।

संगीत की इन्ही विशेषता को ध्यान मे रख कर विद्यालयी शिक्षा मे इसके उपयोग पर केन्द्रित हैं प्रस्तुत शोध पत्र, इसके अर्न्तगत पाठ्य विषयो के साथ नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित विषयों को भी गीत संगीत के माध्यम से बच्चों को पढ़ायें जाने के सकारात्मक परिणाम को विद्वानो ने अनुभव किया है, कि बच्चे पाठ की तुलना में किसी भी बात कों खेल -खेल मे गाते गाते याद कर लेते है, बच्चो में कुछ नया सीखने की जिज्ञासा होती है। इसतरह शिक्षा मे संगीत को भी शिक्षा के साथ जोड़ने से इसके सार्थक परीणाम प्राप्त होंगे।

कूटशब्द : संगीत, शिक्षा, मनोरंजन, धर्म, क्लेश, ईर्ष्या, दुष्टभाव

प्रस्तावना
मानव जीवन के विकास की बुनियाद प्राथमिक शिक्षण के आधार पर ही स्थापित होती है। सामाजिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक सोच का बीजारोपन भी इस अवधि में होता है। पाँच से दस वर्ष के आयुर्वग के बच्चों में जानने एवं सीखने की तीव्र लालसा होती है। विषय को ये आसानी से आत्मसात् कर लेते हैं।

जितने भी महान् व्यक्ति हुए हैं, उनके महान कार्यों के पीछे बचपन की किसी घटना अथवा सीख का विशेष महत्व रहा है। मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के अनुकारणीय जीवन-चरित्र का आधार बाल्यकाल में गुरू विश्वामित्र से मिली अनमोल शिक्षा का ही प्रतिफल है। देवव्रत के तीर से घायल हंस की कातर पीड़ा का अनुभव कर ही राजकुमार सिद्धार्थ हिंसा के प्रतिकार में जीवन अर्पित कर भगवान 'बुद्ध' कहलाये, जिनके अहिंसा–समर्थक विचारों ने दुनिया में क्रान्ति ला दी।

सात वर्ष की आयु में मूलशंकर को मंदिर में शिवलिंग पर चढ़ाये गये प्रसाद एवं अक्षत को चूहे द्वारा तितर–बितर करते हुए देखकर यह सोचने पर विवश कर दिया कि क्या? ईश्वर इस मूर्ति में ही स्थापति है? और इसी जिज्ञासा ने मूल शंकर को "स्वामी दयानन्द" बना दिया और जिनके क्रान्तिकारी सिद्धान्तों ने धार्मिक पाखण्डों में जकड़ी हुई भारतीय समाज को झकझोर कर "आर्यसमाज" के रूप में नई चेतना प्रदान की। पूर्व राष्ट्रपति डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम को बचपन में रामलीला में देखे गये "अग्निबाण" से ही भारत के 'मिसाईल कार्यक्रम की प्रेरणा मिली थी।

आज की रफ्तार भरी जिंदगी में छात्रों के लिए जहाँ जानकारी के नये-नये रास्ते खुलते जा रहे हैं, वहीं हमारी स्थापित परम्परायें टूटती जा रही हैं। बहुत जल्द सब कुछ पा लेने की लालसा से युवाओं में हताशा और निराशा के साथ प्रतिहिंसा की भावना बढ़ रही है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में आरम्भ से ही छात्रों को प्रतियागिता–पहलवान बनने की नई–नई तकनीक विकसित की जा रही है। उपलब्धियों की ऊँचाई प्राप्त करना ही जीवन का लक्ष्य बनता जा रहा है। जीवन में उलब्धियों को प्राप्त करना आवश्यक है परन्तु संतुलन के साथ। विपरीत परिस्थितियों में भी संतुलन बनाकर जिया जा सकता है, ऐसा विश्व के अनेक चिंतक, विचारक, मनीषियों ने माना है। आज की परिस्थिति में बच्चों में प्राणियों के प्रति सौहर्द का भाव पैदा करने वाली शिक्षा पर बल देना आवश्यक है, जिससे उनमें जड़ एवं चेतन के प्रति स्नेह का भाव जागृत हो।

संगीत अपनी मौलिक गुणों के कारण सबों के लिए ग्रहणशील रहा है। आदिम युग से लेकर अभिजात्य समाज में संगीत का समान उपयोग होता आया है। विषय को प्रभावी बनाने के वास्ते संगीत में असीम शक्ति है, तभी तो दुनिया के लगभग सभी धर्मो में संगीत को महत्त्व दिया गया है।

वैदिक काल में सस्वर ऋचाओं का गाना, पाठ की तुलना में अधिक प्रभावशाली लगा और इसी से कालान्तर में "सामगान" का विकास हुआ बच्चों में नैतिक शिक्षा से संबंधित पदों के सस्वर गयान की शिक्षा देना अर्थपूर्ण होगी। सामजसुधार, चरित्रनिर्माण, दायित्वबोध आदि के लिए समय–समय पर इस प्रकार के गेय पदों के प्रसार का विशेष महत्त्व रहा है।

बौद्ध धर्म में भिक्षुओं की संयमित दिनचार्य के बोध के लिए "चर्यागीतों" की रचना की गई थी, जिनका बौद्ध भिक्षु नियमित गायन किया करते थे। आधुनिक भारत में बंगाल के बौद्धिक एवं सामाजिक विकास के साथ आजादी की प्रेरणा देने के वास्ते "जागरण गीत का विशेष महत्त्व रहा है, जिससे बच्चों से लेकर बूढ़ों में परिवर्तन की लहर दौड़ी। इसी क्रम में बांकिमचन्द्र का गीत "वन्देमातरम् सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्" तत्कालीन आजादी के दीवानों का कण्ठाहार था। पंडित राम प्रसाद विस्मिल की रचना "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है" भारतीय क्रान्तिवीरों के उत्साह गीत थे।

समाज के विकास का वास्तविक स्वरूप उसकी व्यवहारिकता पर निर्भर करता है। संगीत की शिक्षा जहाँ एक ओर आदर्श चरित्र निर्माण में सहायक है, वहीं छात्रों को भाषाई अभिव्यक्ति का आधार प्रदान करता है। पाश्चात्य जगत में विद्वानों ने अठारहवीं सदी में जिस "ध्वनि विज्ञान" की खोज की भारत में वह विज्ञान वैदिक काल में ही "प्रतिशाख्य" के रूप में स्थापति हो चुका था। उस काल में सामगायकों की विभिन्न परम्पराओं के गायन–प्रणाली में समरूपता बनाये रखने के लिए ही "प्रातिशाख्य" का निर्माण हुआ, जिसके अन्तर्गत साम के उदात्त, अनुदात्त, स्वारित आदि स्वरों की सीमा, उनके उच्चारण स्थान आदि की जानकारी गायकों के लिए निश्चित की गई थी। इसमें संगीत के स्वरों की साधना के द्वारा भाषा सौष्ठव का सिद्धान्त बताया गया है। अतएव संगीत के स्वरों की साधना से छात्रों में शब्दोच्चारण की व्याकरणीय अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं, साथ ही संभाषण शुद्ध तथा प्रभावशाली हो जाता है।

स्कूली शिक्षा में इस तरह का प्रयास

नब्बे दशक के आरंभिक दिनों में N.C.E.R.T के द्वारा "सामुदायिक संगीत शिक्षा" के रूप में किया गया था, परन्तु प्रत्येक विद्यालयों में इसके संसाधन एवं ज्ञाताओं के अभाव में यह योजना शिथिल होकर मृतप्राय हो गयी।

प्राथमिक विद्यालयों मे संगीत शिक्षा की आनिवार्यता का निर्णय एक सार्थक पहल होगी।

बच्चों में प्राथमिक स्तर से ही संगीत के माध्यम से पाठ्य विषय के सूत्रो को गीत में ढ़ाल कर छात्रों को कंठाग्र कराना चाहिऐ। भारतीय धर्म दर्शन विज्ञान, पर्यावरण, जल संरक्षण, नैतिक शिक्षा, महापुरूषों की वाणीयाँ, ऐतिहासिक महत्त्व, हमारी परम्परा, समाजिक सौहर्द, प्राणियों के प्रति संवेदनशीलता, ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य है जिससे आज़ हमारी युवा पीढ़ी अनभिज्ञ होती जा रही है। दिन–बदिन सहज ही उपलब्ध होती जा रही कम्पयुटर संस्कारित मोबाईल में संल्गन आज की युवा तत्क्षण प्राप्त होने वाली सूचना को ही ज्ञान समझ रहे है। साथ ही वे उन्हीं बातो को ही स्वीकार करना चाहते है जिससे उनका कोई

तत्काल लाभ होने वाला है। हमारी भावी पीढ़ी सहज से प्राप्त करने की मानसिकता से ग्रस्त होती जा रही है।

भारतीय परम्परा में गायन, वादन तथा नृत्य तीनों समुच्चय को "संगीत" कहा गया है, संगीत कला के किसी एक विधा का ज्ञान छात्रों में आरंभ से देना, उसे एक समर्थ नागरिक बनायेगा, उसकी सर्जनाशक्ति बढ़ेगी और सृजानशीलता उसे नित नवीनता का एहसास कारयेगी, जीवन की एकरसता समाप्त होगी साथ ही कलात्मक अनुभूति उसे अन्तस् से सम्पन्न बनायेगे, जिससे उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

संगीत के स्वरो में वह शक्ति है, कि प्राणीयों को इसमे रमने में समय नहीं लगता पाठ की तुलना मे गेय रूप मे बच्चे आसानी से किसी भी विषय को आत्मसात कर लर लेते है।

सन्दर्भ

1. ध्रुवपद और उसका विकास 1976 ई०, आचार्य वृहस्पति, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटनाव 1976 ई०
2. भारतीय व्याख्यान, स्वामी विवेकानन्द– अनुवाद– सूर्यकान्त त्रिपाटी निराला, रामकृष्णमठ, नागपुर– वर्ष 2016 ई०
3. सत्यार्थ प्रकाश – महर्षिदयानन्द सरस्वती, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली- वर्ष– 2021 ई०, 104 संस्करण।
4. ज्ञानानुशासन और विषयों की समझ– संजीव कुमार, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, 2017 ई०।
5. संगीत निबन्ध संगीत, संकलन– लक्षमीनारामण रार्ग– संगीत कार्यालय, हाथरस (यू० पी०)